इस्तांबुल का ऐलान

कुआलालंपुर फोरम का एक कामयाब लोकतांत्रिक व्यवस्था में बदलने का ख़्वाब

दुरूद व सलाम हो आख़री नबी जनाब मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर और आपके अहल और तमाम सहाबा पर।

कुआलालंपुर फोरम फॉर थॉट एण्ड सिविलाइज़ेशन द्वारा जारी किया गया इस्तांबुल का यह ऐलान, 13–15 अप्रैल 2018 को इस्तांबुल में आयोजित फोरम की चौथी कॉन्फ्रेंस के परिणामों में से एक है। जिसका विषय है ''लोकतांत्रिक परिवर्तनः बुनियाद और मेकानिज़म''। कांफ्रेंस में विभिन्न मुस्लिम देशों के विद्वानों और विचारकों ने भाग लिया और कई अहम कागज़ात पेश किये, जिसके बाद हुई चर्चा ने इन कागज़ात के महत्व को और बढ़ा दिया। यह ऐलान उन तमाम बातों का निचोड़ है जिन पर भाग लेने वालों और फोरम के सदस्यों ने सहमति जताई। साथ ही यह ऐलान लोकतंत्र बनाने की प्रक्रिया में फोरम के सपने को भी बयान करता है।

ऐलान इस प्रकार हैः

कुआलालंपुर फोरम के सदस्य निम्नलिखित बातों पर यक़ीन रखते हैंः

- अल्लाह ने इंसान को उसके धर्म, नस्ल और रंग से ऊपर उठकर चुना है और उसे इज़्ज़त दी है। अल्लाह कहता हैः ''यक़ीनन हमने आदम की औलाद को बड़ी इज़्ज़त दी और उन्हें जल और थल की सवारियां दीं और उन्हें अच्छी चीज़ों की रोज़ी दी और अपनी पैदा की हुई बहुत सी चीज़ों पर उन्हें प्रधानता दी।'' इसलिए हर इंसान अपने इंसान होने की बुनियाद पर सम्मान के क़ाबिल है।
- ईश्वर की ओर से इंसान को दी गई इज़्ज़त का एक नमूना आज़ादी हैः आस्था की आज़ादी, सोचने की आज़ादी, धर्म की आज़ादी और राजनीति रास्ता चुनने की आज़ादी, इस मामले में अल्लाह का उसूल यह है किः ''धर्म में कोई ज़बरदस्ती नहीं है; हिदायत गुमराही से अलग हो चुका है, इसलिए जो अल्लाह के सिवा दूसरे पूज्यों का इंकार करके अल्लाह पर ईमान लाए उसने मज़बूत कड़े को थाम लिया, जो कभी न टूटेगा और अल्लाह सुनने वाला, जानने वाला है।''
- इस्लाम की राजनीतिक व्यवस्था के आम उसूलों में एक बेहद अहम आज़ादी अपना शासक चुनने की आज़ादी है और साथ ही उसके काम पर नज़र रखने, उससे जवाब मांगने और उसे नाक़ाबिल पाने पर उसे कुर्सी से उताने का अधिकार भी इसमें शामिल है।
- सत्ता का संबंध राष्ट से होता है। इस्लामी शासन काल में शासक चुनने की अलग–अलग शक्लों में इसकी मिसाल देखी जा सकती है, जिसमें हमेशा राष्ट्र को हवाला बनाया गया है।
- फोरम के सदस्य इस बात पर यक़ीन रखते हैं कि राजनीति का फलसफा ऐसी लोकतांत्रिक व्यवस्था को होना चाहिए जिसमें नागरिकों को बहुमत की बुनियाद पर अपना शासक चुनने का अधिकार हो, और यह बात इस्लामी नज़रिये के *शूरा* की अहमियत को बयान करती है।
- फोरम यह मानता है कि नागरिक समाज को ऐसी शिक्षा की ज़रूरत है जो समाज के आपसी और समाज और सरकार के बीच कानूनी संबंध पर क़ायम हो। इसलिए क़ानून के राज वाले राज्य की तरफ बुलाने अपने साथ यह भी चाहता है कि नागरिक समाज के सभी हिस्से अपनी गवर्निंग बॉडीज़ को चुनने में और हर तरह की नागरिक गतिविधियों में कानून का सम्मान करें। साथ ही

विभिन्न संगठनों के बीच सत्ता के तबादले के उसूल का सम्मान करें और सरकारी संस्थानों में पदाधिकारियों के कानूनी कार्यकाल और आर्थिक पारदर्शिता के उसूल का सम्मान करें।

- फोरम शांतिप्रीय राजनीति के प्रति जागरूकता को बढ़ावा देता है, हिंसा को रोकता है, सत्ता की दौड़ में हिंसा के प्रयोग को अपराध मानता है और समाज को हिंसा के रास्ते पर लाने या उन्हें आतंकवाद के जाल में फंसाने की तमाम कोशिशों को रोकता है, जिनकी वजह से लोग अपनी आज़ाद चाहतों को खो देते हैं और अत्याचार का शिकार बनते है।
- साथ ही फोरम फौजी ताक़तों को राजनीति से दूर रखने, देश की सुरक्षा और लोगों के आत्मनिर्भरता और स्वतंत्रता के अधिकार में सेना का रोल तय करने को महत्वपूर्ण समझता है।
- फोरम दुनिया के लोकतांत्रिक अनुभवों का अध्ययन करके उनसे फायदा उठाने पर ज़ोर देता है, ताकि एक कामयाब लोकतांत्रिक बदलाव के लिए मुनासिब हालात पैदा किये जा सकें। अफ्रीका, सेंट्रल अमेरिका और दक्षिण पूर्वी एशियाई देशों के अनुभवों के साथ विशेष रूप से तुर्की, त्यूनीशिया और मलेशिया के अनुभवों का अध्ययन किया जाए।
- फोरम यह समझता है कि अरब बहार का अनुभव अरब की जनता की आज़ादी की चाहत का बेहतरीन उदाहरण है, क्योंकि यह अनुभव बेहतरीन बुनियादों, सत्ता के सही संतुलन और सही मेकनिज़म पर क़ायम लोकतांत्रिक बदलाव की ज़रूरत को बयान करता है। ज़ालिम सरकार के मुक़ाबले का एकमात्र रास्ता लोकतंत्र है, जिसको सत्ता की लालची सरकारों ने अब तक ठुकराए रखा, जिसकी क़ीमत देश और जनता के हितों से चुकानी पड़ी। साथ ही देश की बड़ी हस्तियों की दिलचस्पी भी नज़र नहीं आई, जो किसी न किसी तरीके से लोकतंत्र से दूर रखते रही।
- फोरम के सदस्य यह चाहते हैं कि सालों से जारी चर्चा के बाद सत्ता के शांतिप्रीय और लोकतांत्रिक तरीके से एक बेहतरीन सामाजिक संस्कृति में बदलने के लिए काम करने किया जाए।
- फोरम सभी राजनीतिक ताक़तों को पिछले सभी मतभेदों को खत्म करके इंसाफ के लिए काम करने की सिफारिश करता है, ताकि पीड़ितों को हुए नुकसान की भरपाई की जा सके जिन्हें ज़ालिम हुकमरानों द्वारा राजनीतिक शोषण और बेदखली का शिकार बनाया गया।
- कांफ्रेंस एक व्यापक स्थानीय, राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय समझौते के प्रोग्राम को पूरा करने पर ज़ोर देता है, ताकि विभिन्न देशों के राजनीतिक हिस्सों के बीच एक ऐतिहासिक समझौते तक पहुंचा जा सके और एक ऐसी सहमति बनाई जा सके जो लोकतांत्रिक बदलाव की राह हमवार करे और देशों के अंदरूनी हालात को बेहतर बनाने, बाहरी स्तर पर सांस्कृतिक योगदान करने, देशों को गुलामी से आज़ादी दिलाने का यह एकमात्र रास्ता बन जाए।
- कांफ्रेंस नागरिक समाज के समर्थन और ऐसे संगठनों के सशक्तिकरण पर ज़ोर देती है जो जनता के समर्थन और पुनर्वास का काम करती हैं, लोकतांत्रिक मूल्यों की रक्षा करती हैं और एक सुरक्षित लोकतांत्रिक बदलाव में अपना योगदान पेश करती हैं।
- कांफ्रेंस सार्वजनिक मामलों में नौजवानों और महिलाओं की शिरकत और उन्हें विभिन्न देशों में लोकतांत्रिक बदलाव में पूरी सक्रिया के साथ हिस्सा लेने के लायक बनाने पर ज़ोर देती है।
- फोरम संभावित हद तक विकास, आर्थिक पहलू, राजनीतिक सुधार और राजनीतिक दौड़ में नर्मी लाने पर ज़ोर देती है। साथ ही इस बात पर भी ज़ोर देता है कि अवाम के सवालों का जवाब दिया जाए, उनकी मांगों को पूरा किया जाए और लोकतांत्रिक बदलाव के दौरान उनकी सेवा की जाए और राजनीतिक मज़बूती के लिए आर्थिक विकास पर ज़ोर दिया जाए।

- फोरम शिक्षा संस्थानों में साइंटिफिक चर्चा पर ज़ोर देता है, ताकि एक ऐसा राजनीतिक नज़रिया कायम किया जा सके जो तानाशाही के तरीकों से ऊपर हो और जो प्राचीन नज़रियों का सुधार करता हो, जो अपने ज़माने के सवालों का जवाब देता हो और जो इंसानी आज़ादी और गरिमा के साथ इंसाफ और बेहतर शासन का समर्थन करने वाले इस्लामी मूल्यों का जायज़ा लेता हो।
- फोरम के प्रबंधक यह मानते हैं कि एक कामयाब लोकतांत्रिक बदलाव बिना खून खराबे और सत्ता में बिना किसी फौजी हस्तक्षेप के विभिन्न राजनीतिक दलों के बीच सत्ता के आने जाने की राह हमवार करती है। जिसके नतीजे में बहुलवाद, पारदर्शिता, सुरक्षा और दूसरों को अपनाने की सोच पैदा होती है।

इसलिए फोरम निम्नलिखित बातों की दावत देता है:

1. **सरकारी राजनीतिक संस्थानः**
   - सरकारी व्यवस्था का जायज़ा लेना, तानाशाही हुकमरानी को छोड़ना और लोकतांत्रिक चुनावी हुकमरानी में बदलना।
   - सत्ता का शांतिपूर्वक तरीके से लोकतंत्र में बदलना और बहुमत की राय के सम्मान का नज़रिया अपनाना।
   - जनता और सामाजिक, सांस्कृतिक व राजनीतिक हस्तियों और नागरिक सामाजिक संस्थानों के अंदर आत्मविश्वास को बढ़ावा देना और समुदायों के बीच भरोसे का निर्माण करना।
   - शांतिपूर्वक व लोकतांत्रिक बदलाव के विषय पर चर्चा में सामाजिक, राजनीतिक और विद्वान वर्गों की शिरकत।
   - स्कूलों और यूनिवर्सिटियों के पाठ्यक्रम में लोकतांत्रिक विचार और लोकतांत्रिक संस्कृति की परिभाषा बताना।
2. **विद्वान और प्रचारकः**
   - लोकतंत्र को लेकर मतभेदों को खत्म करना और एक ऐसी व्यवस्था को अपनाना जो शूरा के मुनासिब हो।
   - सरकारों को नाइंसाफी, तानाशाही, जनता पर अत्याचार और अरब बहार के विरोध से रोकने की तरफ बुलाना।
   - लोकतंत्र, सत्ता के शांतिपूर्वक तरीके से लोकतंत्र में बदलना, सत्ता के दुरूपयोग के बजाए जनता की जीत पर ज़ोर देते हुए विद्वानों की चर्चा का जायज़ा लेना।
   - लोकतांत्रिक प्रक्रिया, शांतिपूर्वक तरीके से लोकतांत्रिक बदलाव और उसके बेहतर क़ियाम के बारे में राजनीतिक अध्ययन।
3. **बुद्धीजीवी और नेता, पार्टियां और सामाजिक संगठनः**
   - नागरिक समाज को बहाल करना, ताकि वह लोकतांत्रिक बदलाव के अमल में अपना रोल अदा कर सके, क्योंकि किसी एक संगठन के लिए यह काम मुमकिन नहीं हो सकता जब तक कि उसे एक प्रभावी और लाभदायक नागरिक समाज का समर्थन हासिल न हो। साथ ही यह कुलीन वर्ग के साथ संबंध पैदा करने और उनके और समाज में सक्रीय राजनीतिक व्यक्तियों के बीच मौजूद खाई को पाटने की ज़रूरत पर ज़ोर देता है।
   - फोरम राजनीतिक दलों और आंदोलनों को अपने अंदरूनी और अवामी मामलों में हिस्सा लेते समय राजनीति के उसूलों का सम्मान करने का निर्देश देता है। साथ ही यह राजनीतिक संस्थाओं के

अंदरूनी ढांचे में लोकतंत्र की छाप, लीडरशिप में पदों के तबादले और फैसले लेने में ठेकेदारी के खात्मे पर ज़ोर देता है, ताकि राजनीतिक संस्थाओं में शामिल सभी लोगों की शिरकत को सुनिश्चित किया जा सके।

- राजनीतिक दलों के ढांचे और कल्चर में लोकतांत्रिक बदलाव की संस्कृति को बढ़ावा देना।
- लोकतांत्रिक सरकार की बहाली, अरब बहार के परिणामों की तरफ लौटने और नाइंसाफी और जुल्म के मुकाबले में मज़बूती से खड़े रहने के लिए अधिकारियों के साथ सहयोग को सुनिश्चित करना।
- अरब बहार के खिलाफ जारी बगावत को समझना। कोई भी घटना आखिरी नहीं होती। इसलिए देश की हकीकत को समझते हुए और हमारी समझ और ऐतिहासिक व वैश्विक हालात को सामने रखते हुए उसे बदला जाना चाहिए।

4. इस्लामी तहरीकें:

- इस्लामी तहरीकों की राजनीतिक, बौद्धिक और संगठनात्मक प्लानिंग के सभी पहलुओं का पूरा जायज़ा।
- लोकतंत्र को शूरा की एक मिसाल समझते हुए उसे शासन व्यवस्था के तौर पर अपनाने का ऐलान। दूसरों को कबूल करने का ऐलान। लोकतांत्रिक व्यवस्था और सत्ता के शांतिपूर्वक बदलाव का इरादा। सत्ता की प्राप्ति के लिए लोकतंत्र, लोकतांत्रिक बदलाव और शांति का गला न घोंटने पर ज़ोर।
- इस्लामी तहरीकों की लीडरशिप में लोकतंत्र को अपनाना और तहरीकों के बुनियादी निज़ाम में लीडरशिप कोर्स की संख्या को यक़ीनी बनाने के लिए काम करना।
- इस्लामी तहरीकों के बारे में सरकार के अनुभवों का अंदाज़ा लगाना, जिसमें लोकतंत्र और सत्ता के लोकतांत्रिक तबादले, नकारात्मक बातों और शक एवं संदेह को खत्म करने और भविष्य में उनसे बचने का इरादा शामिल है।
- गैरों विशेष रूप से गैर–मुस्लिमों के साथ रहने में इस्लामी तहरीकों की हालत का जायज़ा लेना और इस पर कायम सोच को अपनाना, क्योंकि यह सत्ता के लोकतांत्रिक बदलाव को अपनाने के लिए अहम चीज़ है।

5. अरबी व इस्लामी अवाम:

- लोकतंत्र, लोकतांत्रिक व्यवस्था और लोकतांत्रिक बदलाव को अवाम की पसंद के तौर पर हर कीमत पर बरकरार रखना और इस दिशा में तख्तापलट की कोशिश के जवाब में तुर्की की जनता की मिसाल को अपनाना।
- इस बात को सुनिश्चित करना कि अवाम के शब्द ही आखरी शब्द होंगे और लोकतांत्रिक सपने को छोडने की कोशिशों में वह नहीं बहकेंगे। वह अपने अधिकारों को बरक़रार रखेंगे और अरब बहार के परिणामों से नहीं भटकेंगे।
- सोच की आज़ादी और राजनीतिक आज़ादी देना। अपना हाकिम चुनने, उसके काम पर नज़र रखने और उससे जवाब मांगने के अधिकार पर ज़ोर देना।
- हर देश और समाज के हालात के साथ साथ तुर्की और मलेशिया के अनुभवों से फायदा उठाना, ताकि नागरिक समाज के रोल को मज़बूती मिल सके और लोकतांत्रिक चुनाव प्रक्रिया और चुनने की आज़ादी को सुनिश्चित किया जा सके, जैसा कि तुर्की और मलेशिया के हालिया चुनाव में देखने को मिला।